

ISSN : 2348-4624

Year : V, No.: XVII, Issues-III

January-March, 2018

Approved by UGC

Journal No. 48923

III Impact Factor : 2.695

Śodha Mīmāṃsā

**An International Refereed
Research Journal**

Editor in chief

Dr. Rakesh Kumar Maurya

Associate Editor

Dr. Anish Kumar Verma & Dr. Jayant Kumar

Published by :

Kusum Jankalyan Samiti

Deoria, U.P. (INDIA)

‘मैंगोसिल’ कहानी में भूमण्डलीकरण का मर्म सुधीर साहू*

*शोध-अध्येता, प्रो. चन्दा बैन, हिन्दी विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म.प्र.

‘भूमण्डलीकरण’ अंग्रेजी के ‘ग्लोबलाइजेशन’ शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। इसके लिए वैश्वीकरण शब्द का भी प्रयोग किया गया है। भूमण्डलीकरण शब्द लगभग 20वीं सदी के अंतिम दशक में आया है। सामाजिक मानवीय मूल्यों में भूमण्डलीकरण के कारण गिरावट आयी है, जिसमें मनुष्य की भावनाओं को कोई जगह नहीं है। हम अपनी ही जमीन से कट रहे हैं। इस प्रकार मानव जीवन पर भूमण्डलीकरण का गहरा प्रभाव पड़ा है। इस कारण मनुष्य के नैतिक मूल्यों का धीरे-धीरे पतन होता जा रहा है। परिणाम यह हुआ कि जातिवाद, राजनैतिक स्वार्थपरता, भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद आदि को बढ़ावा मिल गया है। इस कारण से देश-विदेश की जनता हीन भावना से ग्रसित हो गयी है और सारी मानवीय संवेदनाएं खत्म होती जा रही हैं। भूमण्डलीकरण ने साहित्य, समाज और जीवन को गहरे स्तर से प्रभावित किया है। वर्तमान समय में भूमण्डलीकरण की जोर-शोर से चर्चा चल रही है। इस विषय को लेकर कई साहित्यकारों ने भूमण्डलीकरण का यथार्थ चित्रण किया है। इस दिशा में उदय प्रकाश की लगभग सभी कहानियों में यह दृश्य दिखाई देता है। ‘मैंगोसिल’ कहानी भूमण्डलीकरण के मर्म के संदर्भ में समाज में बहुचर्चित है। इस कहानी में उदय प्रकाश ने भूमण्डलीकरण के प्रभाव के साथ उसके मर्म को मूलभूत समस्याओं के साथ रेखांकित करने का अनूठा प्रयास किया है।

‘मैंगोसिल’ उदय प्रकाश की एक लंबी कहानी है, जो समाज में व्याप्त वर्तमान बाजारीकरण, वैश्वीकरण की यथोचित घटनाओं को चित्रित करती है। निश्चित रूप से इस कहानी में उदय प्रकाश ने कहानियों के पुराने ढाँचे को तोड़कर नए ढाँचे में ढाला है। डॉ. नामवर सिंह ने उदय प्रकाश की कहानियों पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि ‘उदय प्रकाश ने कहानी के पुराने ढाँचे को तोड़कर जिस नये प्रयोग की शुरुआत की, उसी का विस्तार नयी सदी के पहले दशक में हुआ और मोहनदास तथा ‘मैंगोसिल’ जैसी कहानियाँ मानक बनीं।’¹

लेखक ने ‘मैंगोसिल’ कहानी में शोभा और चंद्रकांत थोराट के माध्यम से समकालीन समय की जटिलता को प्रस्तुत किया है। रचनाकार ने मुख्य रूप से बाजारीकरण के आतंक को दर्शाया है। इस कहानी में दिखाया गया है कि दिल्ली जैसे महानगरों में पूँजीपतियों को सुविधा देने के लिए मेट्रो आदि के नाम पर झुग्गी-झोपड़ी की समुचित व्यवस्था किए बिना, गरीब लोगों को भेड़ बकरियों की तरह समाज से बाहर किसी बस्ती में नगर सभ्यता से दूर भेज दिया जाता है और विकास के नाम पर कुछ दिन बाद उनकी मूल सम्पदा भी उनसे छीन ली जा रही है। दूसरे अर्थों में देखा जाय तो इनकी भूमि अलग-अलग सभ्यताओं द्वारा अधिग्रहित कर ली जा रही है। पूँजी और सत्ता के दिनोंदिन फैलते साम्राज्य ने गरीबों का जीवन समाप्त कर दिया तथा उन्हीं की अस्मिता पर सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाएँ खड़ी होती हैं। इस कहानी के द्वारा रचनाकार ने भूमण्डलीकरण

के प्रभाव को उजागर किया है। भूमण्डलीकरण के कारण वर्तमान समाज में गरीब और पूँजीपति वर्ग का अपवित्र गठबंधन चल रहा है। देखा जाय तो यह आर्थिक स्तर पर एक तरह का अन्यायपूर्ण परिवर्तन हो रहा है। नोबेल पुरस्कार विजेता और अमेरिका के आर्थिक सलाहकार हो रहा है। नोबेल पुरस्कार विजेता और अमेरिका के आर्थिक सलाहकार मण्डल के अध्यक्ष रह चुके अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिगलिट्ज ने लिखा है कि ‘भूमण्डलीकरण तो काम की चीज है लेकिन मौजूदा भूमण्डलीकरण है कि ‘भूमण्डलीकरण तो काम की चीज है लेकिन मौजूदा भूमण्डलीकरण अन्यायपूर्ण है। इसीलिए ये टिकाऊ नहीं है। ये भविष्यहीन है। आर्थिक दृष्टि से भूमण्डलीकरण ने एक साथ संपन्नता और विपन्नता के दो विस्फोट किये हैं।’² इसी संदर्भ में देखा जाय तो पूँजीपति वर्ग और संपन्न होता जा रहा है और गरीब और गरीब होता जा रहा है। इसी तरह मैंगोसिल कहानी भी वैश्वीकरण के मर्म के यथार्थ को व्यक्त करती हुई नजर आती है।

बाजारीकरण की दुनिया में रमाकांत अपने स्वार्थपूर्ति के लिए अपनी पत्नी शोभा को पुलिस और बिल्डर के सामने परोस देता है। शोभा के साथ बहुत अत्याचार किया जाता है। ‘मैंगोसिल’ कहानी के माध्यम से लेखक ने वर्तमान में हो रहे स्त्रियों के शारीरिक अत्याचार को उजागर किया है। आधुनिकता के दौर में मनुष्य अपनी आत्मीयता खो चुका है। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए वह कब अपने रिश्ते की बलि चढ़ा दे, ये सोचा नहीं जा सकता! कहानी का यह दृश्य महानगर के नाम पर हो रहे शोषण को उजागर करता है। गरीब व्यक्ति अपने शौक पूरे करने के लिए नगरों की तरफ पलायन कर रहा है। बाजारीकरण की दुनिया में फंसकर अपने शौक पूरा करने के लिए यदि उसे गलत काम करना पड़े तो वह उसे भी परिणाम को जाने बिना कर देता है। गरीब लोगों की झोपड़ियाँ सरकार द्वारा देश के विकास के नाम पर दूसरी जगह भेज दी जाती हैं, किन्तु कुछ समय पश्चात् वो जगह भी इनसे छीन ली जाती है। गरीबों को देश के विकास के नाम पर शहर से बाहर निकाल फेंक दिया जाता है।

देश के विकास के नाम पर देश की संस्कृति और प्रवृत्ति को भी उजाड़ा जा रहा है। देश के पूँजीपति लोग गरीब लोगों को विवश कर उन्हें अपनी जमीन से हटाकर अपने स्वार्थ के लिए कारखाने, बैंक, हवाई अड्डे आदि बनाते हैं। वास्तविक रूप से देखा जाय तो इन जगहों से गरीबों को वंचित कर दिया जाता है। व्यवसायीकरण के नाम पर हो रहे भ्रष्टाचार को उदय प्रकाश ने अपनी कहानी ‘मैंगोसिल’ के माध्यम से लोगों के सामने प्रस्तुत किया है। ‘मैंगोसिल’ कहानी में आम आदमी के जीवन जीने की विवशता का यथार्थ चित्रण है। इसमें सूर्यकांत (सूरी) की बीमारी मैंगोसिल के माध्यम से चंद्रकांत थोराट और उसकी पत्नी शोभा के उत्पीड़न और अत्याचार के संघर्ष की गाथा है। चंद्रकांत थोराट संवेदनशील सज्जन व्यक्ति है, जो प्रारम्भ में बिल्डर के पास नौकरी करता था। चंद्रकांत थोराट के माध्यम से लेखक यह दिखाना चाहता है कि किस तरह समाज में गरीब और जातिवाद के नाम पर अमानवीय व्यवहार किए जा रहे हैं। सूर्यकांत कहता है कि

“मेरे सिर के भीतर जो रोग है, वह गंदे नाले से पैदा हुआ, जो हमारी मियानी के पास बहता था” इसके बाद कुछ देर तक शून्य में देखते रहने के बाद उसने गंभीरता से कहा “मैंगोसिल नाम का यह रोग जिस वायरस से पैदा होता है, मालूम है उस वायरस का नाम है?..... गरीबी।”

इस तरह लेखक ने ‘मैंगोसिल’ कहानी के माध्यम से बताया है कि मैंगोसिल रोग भी गरीबी का कारण है। जूरफेल्ड और लिंडवर्ग ने लिखा है कि ‘गरीबी एक गंभीर बीमारी है, जिसमें उसका इलाज दवा की गोलियों नहीं है। निर्धन व्यक्ति को भरपूर भोजन मिले, कुछ पौष्टिक तत्व भी योजना में शामिल हो तब ही उसकी गरीबी नाम की बीमारी को बिना समझे एक शारीरिक बीमारी मुखार, पेचिस, पीलिया, मलेरिया आदि समझकर इलाज करते हैं।”

इस कहानी की मुख्य नायिका शोभा है, जो अपने पति के साथ-साथ उसकी लालची प्रवृत्ति के कारण उसके साथ पुलिस और बिस्तर की धातना का भी शिकार होती है। शोभा का शारीरिक और मानसिक शोषण भी किया जाता है, शोभा का पति रमाकांत बेरोजगारी से ग्रस्त है, बाजारीकरण के दौर में अपने ऐशो आराम के लिए पुलिस वालों की जी हजुरी करता फिरता है।

मैंगोसिल कहानी में सूरी का बड़ता हुआ सिर अनियंत्रित विकास को दर्शाता है। कहानी में लेखक सूरी से सीधे जुड़ा हुआ होता है। कहानी का यह अंश देखे “यह बीसवीं सदी के अंत और इक्कसवीं सदी के प्रारंभिक साल थे और मेरा जीवन मेरी हर रचना के साथ किसी गहरे अंधकार में डूबता जा रहा था दुनिया बहुत तेजी से बदल रही थी। दिल्ली और दूसरी राजधानियाँ उससे भी तेजी से यहाँ पर जगह बस एक ही धुब बचा था। निर्मम, बर्बर, लोलुप अनैतिक सत्ता और तमूद्धे का धुब। कहीं कोई विकल्प नहीं था। मैं अपनी परेशानियाँ दिल्ली के ताकतवर लेखकों, विद्वानों को बताने की कोशिश करता, तो रंता लगता जैसे समुद्र की अतल गहराई में रहने वाला कोई घोंघा ऊपर पृथ्वी पर रहने वाले अघ्राए दिव्य दोषायों को अपने समुद्री अनुभवों की कोई विचित्र, अवृझ विजातीय बात बता रहा हो। मेरी भाषा उनकी समझ में नहीं आती थी। असुरक्षा, दुखों और तनावों में से निकलते वाक्यों को वे कौतूहल, निस्संगता और आश्चर्य से देखते थे। उनका वर्ग बिल्कुल एक दूसरा वर्ग था। उनके लिए जो विष था, वही अब मेरा अन्न था। ऐसा एक कवि ने कई साल पहले, शायद ऐसे ही किसी जीवन से गुजरते हुए लिखा भी था।”

वर्तमान समय के इस भूमण्डलीकरण के दौर में गरीबों को कुचल दिया जाता है, उनकी जगह हड़पकर औद्योगिक कारखाने, प्लांट, शॉपिंग माल, बैंक, रेलवे स्टेशन, हवाई अड्डे आदि स्थापित किये जा रहे हैं। राजगार भी बड़े-बड़े लोगों को मिल रहा है। इन सब उपक्रमों का लाभ उद्योगपतियों एवं पूंजीपति लोगों को हो रहा है। गरीब असहाय लोग अपने विकास और सम्पत्ति से वंचित होते जा रहे हैं। लोगों से कहा जाता है कि इससे देश की संस्कृति और सुंदरता बढ़ेगी, किन्तु उससे कहीं ज्यादा नुकसान हो जाता है। लेखक ने कहा है कि “लेकिन एक समय और आप जान ले। वह यह कि हमारा जीवन किसी समृद्ध नगर या देश की संस्कृति को सुंदर और विकसित बनाने के लिए उजाड़ा जाता है या ऊर्जा और ईंधन के लिए डुबा दिया जाता है, तो सिर्फ हम नहीं इस धरती से हिरण, तितलियाँ, पक्षी, हाथी, पीपल, पलाश, सागौन, शाल और तमाम वनस्पतियों समेत बहुत से ऐसे देवी-देवता भी डूब जाते हैं, जो हजारों वर्ष पहले, किसी त्रेता या,

द्वापर युग में स्वर्ग में उतरकर, पत्थरों और पाण्डुलिपियों में हस्तलिखित बस गये थे कि वे हमारी पीढ़ाओं को कम करें और वे हमारे उत्पीड़न और विनाश को सत्ता बनाये। वे हमारे अँधेरी में कन्दीलौ, बल्लो या जुगनुओं की तरह जलें। जब चारों ओर यथार्थ भयावह हो जायें। क्योंकि आप यह सच जानते हैं कि समृद्ध और विकसित संस्कृतियों की वे औषधियाँ, जो पीछाओं से राहत देती हैं या वह उनके जो रोशनी या हवा या शब्दों और छवियों की माया पैदा करती हैं वह हमारे लिए नहीं होती। बड़े-बड़े अस्पताल, बैंक संस्थान, सरकारी न्यायालय, हवाई अड्डे और चौड़ी सड़कें हमारे लिए नहीं हैं। बड़े-बड़े तो हम भगा दिये जाते हैं या कुचल दिये जाते हैं।”

कहानी में शोभा और चंद्रकांत के जीवन में इतनी अधिक गरीबी थी कि वह अपने बच्चे सूरी का इलाज नहीं करा सकते थे। यह गरीबी सूरी की मृत्यु का प्रतीक है। सूरी को मैंगोसिल बीमारी थी, जिसका कोई इलाज नहीं था। डॉक्टरों का कहना था कि अगर बीस पच्चीस लाख रुपये हो तो कुछ भी संभव है, परंतु शोभा और चंद्रकांत के जीवन में ये तो सपने में भी संभव नहीं था। इस बीच मैं कई महीने चंद्रकांत से नहीं मिल पाता है। एक बार उसका फोन जरूर आया, लेकिन उसकी आवाज में गहरी निराशा और हताशा थी। उसने बताया कि डॉक्टरों ने तो लगभग जवाब ही दे दिया है। उनका कहना है कि लू अंधक से अधिक डेढ़ या दो साल ही जिंदा रह सकता है। “इस वन का कोई इलाज नहीं है हों अगर बीस पच्चीस लाख रुपये हो तो कुछ हो सकता है। चंद्रकांत और शोभा के जीवन में इतने रुपये किम्वं असंभव सपने की तरह थे।” इस प्रभाव यह है कि वैश्वीकरण के इस दौर में गरीब और गरीब होता जा रहा है, अमीर और अमीर होता जा रहा है। डॉ. तपना गिंसवाल ने लिखा है कि, “भूमण्डलीकरण एक तरह तो समाज के उच्च एवं प्रतिष्ठित स्थानों पर काबिज व्यक्तियों के असीम रूप से धनवान बना देता है एवं दूसरी तरफ समाज से बदे हुए या निम्न स्थिति में रहने वाले लोगों को गरीब एवं कंगाल बना देता है। इस तरह एक एम.बी.ए. छुट्टी वित्ताने के लिए विदेश जा सकता है एवं उपभोक्तावादी जीवन पद्धति का पूरा आनंद उठा सकता है, वहीं गरीब लोग द्वितीय दर्ज का जीवन जीने के लिए आवश्यक मूलभूत चीजों से वंचित रह जाते हैं तथा अपनी न्यूनतम जीविका के लिए दिन-रात जी तोड़ परिश्रम करते हैं।” गरीब लोग जानवरों से भी गया गुजरा जीवन यापन करते हैं। वैश्वीकरण के दौर में सूरी बोलता है कि दस-बीस प्रतिशत लोग आदमी होते हैं, बाकी तो सब जानवरों से भी गए गुजरे होते हैं। सूरी कहता है कि दुनिया में सिर्फ दस से बीस प्रतिशत लोग ही आदमी होते हैं। बाकी या तो चींटे कौंक्रोच हैं या कुत्ते सुअर और बैल।” सूरी अपने ही परिदार के उदाहरण देता है और कहता है कि “हमारे ही घर में देखो बाबू के बैल हैं, मम्मी मशीन और अमर कौंक्रोच और मैं तो असल में उस नाले का एक केचुआ था, जो एक रात सरकता हुआ मम्मी के चेहरे घुस आया था।”

‘मैंगोसिल’ कहानी में लेखक ने एक बीमारी की कल्पना की है जिसमें बच्चों के सिर बड़े हो जाते हैं और वह बीमारी है—गरीबी। कहानी के अंत में वैश्वीकरण का मर्म इस प्रकार उभरकर सामने आता है कि “वे गरीब घरों में गंदगी और कुपोषण के बीच पैदा हुआ है उनकी आँखें चींटियों की तरह लाल हैं और उन्हें नींद लगभग नहीं आती।”

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उदय प्रकाश ने बड़े-बड़े महानगरों के नाम पर जो भ्रष्टाचार गरीब व्यक्तियों के नाम पर कर रहे थे, उसे अजागर किया है। महानगरों में गरीब और गरीब होता जा रहा था, अमीर और अधिक अमीर हो रहा था। साथ ही लेखक ने गरीबों पर हो रहे अत्याचार एवं आतंकवाद को भी उजागर किया है। सही मायने में सामान्य गरीब आदमी जिन्दगी भर बड़ी-से-बड़ी मेहनत करके भी भूखों मरता है। पर वहीं पूँजीपति और उद्योगपति लोग ऐशोआराम से बिना हाथ-पांव हिलाये सत्ता और धन के प्रभाव से आजीवन फलों की सेज पर सोता है। यह समाज की विडम्बना नहीं तो और क्या है !

सन्दर्भ :

1. आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण, विजयमोहन सिंह, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2014, पृ. 547

2. भूमण्डलीकरण औ हिन्दी उपन्यास, संपादक : नीरू अग्रवाल, अनन्य प्रकाशन दिल्ली, संस्करण : 2017, पृ. 19
3. मैगोसिल, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण : 2017, पृ. 121
4. 21वीं सदी में भारत के सरोकार, संपादक : एच. के. दीवान, वेददान सुधीर, सामयिक बुक्स नई दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2013, पृ. 163
5. मैगोसिल, उदयप्रकाश, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण : 2017, पृ. 90
6. वही, पृ. 66
7. वही, पृ. 103
8. भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में साहित्य, समाज, संस्कृति और भाषा, संपादक : डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, सरस्वती प्रकाशन इलाहाबाद, प्रथम संस्करण : 2016, पृ. 348
9. मैगोसिल, उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण : 2017, पृ. 121-122
10. वही, पृ. 122
11. वही, पृ. 139

